मानना और जानना

मानव की यात्रा मानने से शुरू होकर जानने की तरफ निरंतर अग्रसर है.
जो-जो जानकारी होती जाती है उसके विरोधी मानने समाप्त होते जाते हैं.
सही बात वोही मानी जाती है जो और अन्य सही बातों का आधार बनती है.
सही बात की खोज प्रायः एक ही करता है पर सब उसे स्वीकार कर लेते हैं, जबकि, कुछ बातों को बहुत से
मानते हैं पर स्वीकार कुछ ही करते हैं.
मानना अज्ञान है और जानना ज्ञान.

पुनर्जन्म एक कल्पना है, यदि इसे सही भी मान लिया जाये तो भी यदि अगले जन्म में पिछले जन्म के कर्मों
का फल मिलता है तो भी एक समान कर्मों के फल का भोग अलग-२ हो सकता है.
वो ऐसे कि, एक जैसे संसाधन होते हुए भी सुख या दुःख अलग-२ हो सकता है.
दो व्यक्ति एक जैसी परिस्थिति में भिन्न-२ सुख और दुःख कि स्थिति में हो सकते हैं.
फिर कैसा पिछले जन्मों का फल, जब परिणाम भोगने वाले के महसूस करने के ऊपर है.